DATE 13.5.24
PAGE No. 1

टेंडर हार्ट हाई स्कूल, सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़

कक्षा - चार 4 शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य पाठ-4 हिमालय (कविता)
(पिछले सप्ताहकाशेष भाग)
पुस्तक - नवतरंग भाग-4

शुभ प्रभात बच्चो!

बच्चो! पिछले सप्ताह आपको पाठ-4 'हिमालय' कविता का कुछ भाग भेजा गया था। आज हम हिंदी साहित्य की पुस्तक नवतरंग भाग-4 के पाठ-4 हिमालय' कविता को पढ़ेंगे। यह कार्य आपको 13.5.24 को भेजा जा रहा है।

बच्चो! मैं पढ़ाते समय आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए आप तीन मिनट का अंतराल लेकर अपनी हिन्दी साहित्य की अभ्यास-पुस्तिका में उत्तर लिखेंगे। इसके लिए आप पहले से ही तैयार रहें।

3. खड़ा हिमालय बता रहा है
डरो न आँधी-पानी में,
खड़े रहो अपने पथ पर
सब कठिनाई तूफ़ानी में!

सरलार्थ:-

इन पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि यह हमारा हिमालय पर्वत हमें यह बता रहा है कि जैसे वह (हिमालय) आँधी-तूफ़ान, सर्दी-गर्मी, बारिश-धूप तथा अन्य मुसीबतों का सामना करता हुआ निरन्तर अपने स्थान पर अडिग खड़ा रहता है, उसी तरह से हमें भी जीवन में आने वाली आँधी रूपी काठिनाइयों से नहीं घबराना चाहिए और इन विघ्न-बाधाओं का डटकर मुकाबला करना चाहिए तभी हमें सफलता प्राप्त होगी। बच्चो! हमें जीवन में निरंतर परिश्रम करते रहना चाहिए। क्योंकि परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 13.5.24
PAGE No. 2

कक्षा- चार 4 शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य पाठ-4 हिमालय (कविता)

4. डिगो न अपने प्रण से तो
सब कुछ पा सकते हो प्यारे,
तुम भी ऊँचे उठ सकते हो
छू सकते तुम नभ के तारे।

सरलार्थ :- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि द्विवेदीजी कह रहे हैं कि यदि आपने कुछ करने की ठान ली है तो उस प्रतिज्ञा पर डटे रहो। यदि आप दृढ़ विश्वास के साथ हिमालय की भाँति खड़े रहते हो, घबराते नहीं हो तो तुम इस संसार में सब कुछ प्राप्त कर सकते हो। अपने नेक पक्के इरादों से तुम इतने ऊँचे उठ सकते हो कि आकाश से तारे भी ला सकते हो अर्थात् उन्नति की ऊँचाइयों को छू सकते हैं। सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। आप यहाँ तीन मिनट का समय लेकर इन प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। अतः पुस्तक, अभ्यास-पुस्तिका और लेखनी लेकर आप तैयार रहें।

प्रश्न 1. हिमालय हमें किससे न डरने की बात कह रहा है?
प्रश्न 2. हम सब कुछ कब प्राप्त कर सकते हैं?
प्रश्न 3. आकाश के तारों को कब छुआ जा सकता है?

बच्चो! अब आपका अंतराल का समय समाप्त हुआ। मैं इन प्रश्नों के उत्तर बताती हूँ जो इस प्रकार हैं—

उत्तर 1. हिमालय हमें विघ्न-बाधाओं से न डरने की बात कह रहा है।
उत्तर 2. हम सब कुछ तब प्राप्त कर सकते हैं जब किसी कार्य को प्राप्त करने का पक्का मन बना लें, तो आकाश

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा- चार 4 शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य पाठ- 4 हिमालय (कविता)

के तारे भी दूर नहीं।

उत्तर 3. जब मन में पक्की लगन, दृढ़-विश्वास, तीव्र इच्छा शक्ति हो तो आकाश के तारों को छुआ जा सकता है. अर्थात् सफलता प्राप्त की जा सकती है।

बच्चो! अब मैं कविता का अगला खंड पढ़ने जा रही हूँ।

5. अचल रहा जो अपने पथ पर
लाख मुसीबत आने में
मिली सफलता जग में उसको
जीने में मर जाने में।

कवि- सोहन लाल द्विवेदी

सरलार्थ:-

इन पंक्तियों में कवि यह कहना चाह रहे हैं कि लाख मुसीबत आने पर भी जो व्यक्ति अपने रास्ते पर अडिग खड़ा रहता है, उनसे घबराता नहीं है। सफलता उन्हीं को प्राप्त होती है। जो व्यक्ति घोर कठिनाइयों का सामना करते हुए कार्य करते हैं वे अमर हो जाते हैं। उनके कार्यों को, जीवित रहते और मरणोपरांत भी याद किया जाता है।

सफलता परिश्रमी व्यक्ति के चरण चूमती है।

बच्चो! यह पाठ यहाँ समाप्त हुआ। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ।

गृहकार्य:- सभी बच्चे पृष्ठ-28 पर दिए शब्दार्थ को लिखेंगे। पृष्ठ-28 पाठ बोध का प्रश्न-1 और पृष्ठ-29 पर दिए प्रश्न-3,4 को पुस्तक पर ही लिखेंगे।

सब बच्चे लेख पर विशेष ध्यान दें।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner